इकाई 28 नमभूमि

इकाई की रूपरेखा

28.0 उद्देश्य
28.1 प्रस्तावना
28.2 नमभूमि क्या है
28.3 नमभूमि क्षेत्र का महत्व
  28.3.1 नमभूमि की विशेषताएं
  28.3.2 नमभूमि के कार्य
28.4 भारतीय नमभूमि क्षेत्र
28.5 पर्यटन का प्रभाव
28.6 अत्यधिक पर्यटन और नमभूमि क्षेत्र
28.7 नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण
28.8 सारांश
28.9 शब्दावली
28.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

28.0 उद्देश्य

इस इकाई में नमभूमि क्षेत्र की चर्चा की गई है तथा पर्यटन के कारण नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभावों को समझाया गया है। इस इकाई के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- नमभूमि क्षेत्र के संबंध में जानकारी प्रदान करना,
- नमभूमि क्षेत्र के महत्व व कार्यों की जानकारी,
- पर्यटन से नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव से आपको अवगत कराया गया है, और
- नमभूमि क्षेत्र के संरक्षण के संबंध में सुझाव दिए गए हैं।

28.1 प्रस्तावना

मानव प्रजाति ने हमेशा अपने लाभों के लिए अपने आस-पास के परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का दोहन किया है। वायु, जल, भूमि, वायुमंडल, तथा जीवित प्राणी–यह सभी तत्व एक या अन्य रूप में मानव प्रणाली के लिए उपयोगी हैं। नमभूमि क्षेत्र अभी कुछ दिनों से अत्यधिक उपयोगी प्राकृतिक संसाधन तंत्र के रूप में चिन्हित किए गए हैं। इस इकाई में नमभूमि क्षेत्र की परिभाषा के साथ तथा भारत के कुछ नमभूमि क्षेत्र की चर्चा की गई है। यह इकाई नमभूमि क्षेत्र के उद्भव तथा दुनिया के सभी भागों में इसके उपयोग व महत्व तथा पर्यटन के क्षेत्र में उसके उपयोग से होने वाले प्रभावों, परिणामों से परिचित कराती है। अधिक पर्यटन से इन नमभूमि क्षेत्रों पर छाने वाले गहरे संकट का भी वर्णन किया गया है। अन्ततः यह इकाई इन नमभूमि क्षेत्रों के संरक्षण के संबंध में कुछ विशिष्ट विधियां बताती हैं।

28.2 नमभूमि क्या है?

शब्दकोष में नमभूमि क्षेत्र को मुख्य रूप से दलदल या भूमि के नम हिस्से के रूप में परिभाषित किया है परंतु सामान्य बोलचाल और उपयोग के लिए नमभूमि क्षेत्र ठहरे हुए पानी के उन बड़े क्षेत्रों को

मान लिया गया है जो चारों ओर भूमि से घिरे रहते हैं। नमभूमि क्षेत्र की अन्तर्राष्ट्रीय रूप से मान्य परिभाषा यह है – "कोई भी प्राकृतिक या मानव निर्मित, स्थाई या अस्थाई पानी, दलदल या ईंधन वाली जलाऊ लकड़ी का वह जमीनी हिस्सा जिसमें पानी थमा हुआ हो या बह रहा है–वह पानी चाहे ताजा हो, गंदा हो या नमक युक्त खारा हो जिसमें समुद्री जल भी हो सकता है जिसमें पानी की गहराई 6 मीटर से ज़्यादा न हो।"

भारत की नमभूमि क्षेत्र लद्दाख के अति ठंडे इलाके से लेकर नमी युक्त वातावरण वाले इम्फाल तक, राजस्थान के गर्म रेगिस्तानी इलाके से लेकर इम्फाल की अधिक नमी वाले क्षेत्रों तक तथा मौसमी बारिश वाले मध्य भारत के मैदानी इलाकों तथा दक्षिणी आर्द्र इलाकों तक अलग-अलग स्थित तथा व्याप्त है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत वर्ष में उपलब्ध फैले नमभूमि क्षेत्र का क्षेत्रफल 41 लाख हैक्टेयर में फैला हुआ है जिसमें से 15 लाख हैक्टेयर प्राकृतिक रूप से निर्मित तथा शेष 26 लाख वर्ग हैक्टेयर मानव निर्मित है।

इस इकाई में हमने नमभूमि क्षेत्र की पारिस्थितिकी के महत्व तथा पर्यटन उद्योग का उन पर पड़ने वाले प्रभावों के संबंध में आपका ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है।

पर्यटन के छात्रों को भारत में उपलब्ध इन नमभूमि क्षेत्र की प्राथमिक जानकारी होना जरूरी है क्योंकि दूर-दूर तक फैले पानी के विशाल क्षेत्रों को देखना सुखकर लगता है। ये नमभूमि क्षेत्र प्राय: देशी व विदेशी पर्यटकों को अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण अपनी ओर आकर्षित, आमंत्रित करते हैं। इन नमभूमि क्षेत्रों में नौकायान, पालवाली नावें, मछली का शिकार, डालफिन्स, वन्य प्राणी तथा अन्य देशों से उड़कर आने वाले देशान्तर गामी मेहमान पक्षियों के अतिरिक्त आकर्षण हो सकते हैं। भारत के कुछ बड़े नमभूमि क्षेत्रों में तथा चिल्का झील, उदयपुर झील तथा श्रीनगर स्थित डल झील कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। इसके अतिरिक्त वैसे भी इन नमभूमि क्षेत्र का ज्ञान अनिवार्य है क्योंकि प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में इन नमभूमि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका व कार्य होते हैं। यह नमभूमि अन्न नियंत्रण, जल भण्डारण तथा उसके शुद्धिकरण, समुद्री तटों के बचाव तथा समुद्र व नदी के किनारों के क्षेत्रों को यथावत बनाए रखने में बड़ा योगदान देते हैं। इन सबका विस्तृत विवरण इस इकाई के उपभाग 28.3.2 में किया जाएगा।

28.3 नमभूमि क्षेत्र का महत्व

जैसा कि इस इकाई के भाग 28.2 में बताया गया है कि भारत में अनेक नमभूमि क्षेत्र हैं। इनके महत्व को भौतिकी, रसायनिक और जैविक प्रक्रियाओं के संदर्भ में देखा जाना चाहिए जो कि इन नमभूमि क्षेत्रों में होती है। इसके अन्तर्गत भंडारण, बीजों का अंकुरित होना, आयन परिवर्तन, पोषण प्राप्ति, पानी का जमीन द्वारा सोखा जाना, बैक्टेरिया तथा फंगस का पनपना, गैसीकरण, नोषजनीकरण तथा जैविक परिवर्तन इत्यादि सम्मिलित हैं।

28.3.1 नमभूमि की विशेषताएं

पूरे विश्व में कोई भी नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण माने जाते हैं बशर्ते उनमें निम्न विशेषताएं हों :

- इसे प्राकृतिक या लगभग प्राकृतिक होना चाहिए और यह जैव भौगोलिक क्षेत्र के अनुरूप होना चाहिए।
- किसी भी तटीय व्यवस्था, या बड़ी-बड़ी नदियों के सिंचित प्रदेश की प्राकृतिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण जैविक, पारिस्थितिकी तथा जलीय भूमिका निभाते हों।
- ये अनुपम या विशेष प्रकार के नमभूमि क्षेत्र हों, या
- वनस्पति जगत या प्राणी जगत की कोई अद्भुत, विलक्षण या लुप्त होने वाली, संकटापन्न में प्रजाति के जीवनयापन या अस्तित्व में सहायक सिद्ध हों।

28.3.2 नमभूमि क्षेत्र के कार्य

चूंकि प्राय: सभी नमभूमि क्षेत्र में अनेक प्रकार के पौधे तथा जीवों का प्रकृतिवास हुआ करता है तथा यह नमभूमि क्षेत्र उथले, कम गहरे जल क्षेत्र हुआ करते हैं तथा जल में रहने वाले पक्षियों तथा छोटे जलीय जीवों के आवास स्थान होते हैं। इस प्रकार के नमभूमि क्षेत्र के उदाहरण हमें सारी दुनिया में देखने को मिलते हैं। स्पेन में स्थित कोटा डौन्ना का नमभूमि क्षेत्र लगभग पूरे यूरोप की समस्त पक्षी प्रजातियों में से आधी प्रजातियों की संख्या के जीवों का रहने का घर है। जिसमें अनेक प्रजातियाँ लगभग लुप्त होने की कगार पर हैं। उसी प्रकार ग्रिस का वाटर लगून "अलयागी किटोरस" लगभग मेडेटेरियन समुद्र में रहने वाली कोई 7000 प्रजातियों की समुद्री चिड़ियों के लिए अच्छी खासी चिड़िया आबादी है।

भारतवर्ष में राजस्थान के अन्तर्गत भरतपुर स्थित भरतपुर नमभूमि क्षेत्र, सायवेरिया से आने वाली देशांतरगामी सारसों का मौसमी डेरा है। पक्षी प्रजातियों को संरक्षण तथा देशांतरगामी पक्षियों के लिए मौसमी ठिकाना देना प्राय: अधिकांश नमभूमि क्षेत्र विनिर्दिष्ट कार्य हैं। पक्षियों को ठिकाना देने या उनके सुस्ताने के लिए जगह देने के अलावा यह नमभूमि क्षेत्र अनेक प्रकार की मछलियां, सीपियों, तथा कई प्रकार के जलीय जीव जन्तु प्राणियों के पनपने के स्थान हैं। उड़ीसा की चिल्का झील में डेल्फिन मछलियां हैं जो उस क्षेत्र में यहाँ वहाँ विशेषकर नदी के समुद्र के मिलने के स्थान पर अधिकतर विचरती रहती हैं। समुद्र के किनारे स्थित नमभूमि क्षेत्र, समुद्र तथा मीठे पानी के बीच अथवा मीठे पानी और अधिक संख्या में विविध जीवों के रहने के भूमि क्षेत्र के बीच जोड़ने की कड़ी होते हैं।

पारिस्थितिकी की दृष्टि से नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। वे पानी के पूरे क्षेत्रफल को नियमित और नियंत्रित करते हैं तथा एक बड़े प्राकृतिक छन्ने की तरह कार्य करते हैं और जैसा कि ऊपर बताया गया है अद्भुत पोषण गतिशिलता को प्रदर्शित करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में पोषण की पुर्नप्राप्ति, अधिक नाइट्रोजन के विसर्जन, फास्फेट तत्व को निष्क्रीय करने तथा राक्सिन तत्वों का अन्य घुलनशील रसायनिक तत्वों तथा भारी धातुओं को पौधों के द्वारा आत्मसात कर लेने की गुणवत्ता के आधार पर तथा दूषित विसर्जित पानी के शुद्धिकरण में भी सहायक होते हैं।

इसके अलावा समुद्री तटों के पास स्थित नमभूमि क्षेत्र में पनपने वाले छोटे पौधे, समुद्र के कारण होने वाले कटाव के लिए भी प्राकृतिक रूप से एक मजबूत आड़ का कार्य करते हैं। समुद्र स्तर के बढ़ने के संभावित खतरों का डर सारी दुनिया में बना रहता है। इस संभावित खतरों को रोकने के लिए एक त्वरित उपाय के रूप में विशेषज्ञों ने समुद्र के किनारे कीचड़ में फलने और बढ़ने वाले पौधे (मैनग्रोव) लगता है। कीचड़ों में पनपने वाले पौधों (मैनग्रोव) से युक्त भारत तथा बंगला देश के नमभूमि क्षेत्र, बंगाल की खाड़ी के खतरनाक समुद्री तूफान के विरूद्ध सशक्त सक्षम प्रतिरोधक का काम करते हैं। इस प्रकार यह नमभूमि क्षेत्र बाढ़ को रोकने में सहायता पहुँचाते हैं।

पर्यावरण के संदर्भ में भी नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह पानी की रक्षा करते हैं तथा उसकी गुणवत्ता बढ़ाते हैं तथा स्थानीय मौसम को भी नियंत्रित रखते हैं। पानी की गुणवत्ता में सुधार लाने का प्रयोग, नमभूमि क्षेत्र के उपयोग के द्वारा ठंडे मौसम में किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में नमभूमि क्षेत्र प्राकृतिक रूप से दूषित पानी को रोकने तथा विसर्जित अपशिष्ट में उपलब्ध पोषक तत्वों का कृषि तथा मछली पालन के माध्यम से बड़े प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है। नमभूमि क्षेत्र बाढ़ नियंत्रण, पानी की गुणवत्ता को नियंत्रित करने तथा सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कृषि उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) नमभूमि क्षेत्र क्या होते हैं? पांच वाक्यों में लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन स्थानों/देशों के नाम बताइए जहाँ यह नमभूमि क्षेत्र स्थित है।

.....

.....

क) कोटाडोन्न

.....

.....

3) नमभूमि क्षेत्र द्वारा किए जाने वाले मूलभूत कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

28.4 भारतीय नमभूमि क्षेत्र

भारत के अनेक प्राकृतिक नमभूमि क्षेत्र के उत्तर या दक्षिणी भारत की प्रमुख नदियों के नदी तंत्र से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी ओर अनेक नदी तंत्र व्यवस्था को मजबूत करने के लिए बनाई गई, निर्मित अनेक बहुउद्देशीय परियोजनाओं के पूर्ण हाने पर भी अनेक मानव निर्मित नमभूमि क्षेत्र प्राप्त हुए हैं। पंजाब में समतल और बीस नदियों के संगम पर निर्मित हरीके बराज, पंजाब में भाखरा नांगल बांध तथा बिहार-नेपाल की सीमा पर निर्मित कोसी बराज। इन सबके अलावा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्राकृतिक झीलों के अलावा हमारे पास कृत्रिम नमभूमि क्षेत्र भी हैं। उदाहरण के लिए काबर झील, चिल्का झील, पिचोला परिसर तथा सुखना झील विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ 6740 कि.मी. क्षेत्रफल का दलदल क्षेत्र भी उपलब्ध है। हमारे देश में नदी मुहानों पर बनी इस प्रकार की दलदल भूमि अधिकांशत: पश्चिम बंगाल का सुंदरवन क्षेत्र तथा अंडमान

चित्र 1 : रेणुका झील

निकोबार द्वीप समूह में है जो भारत में इस प्रकार की विविध उपलब्ध डेल्टाओं के 80% भाग है। शेष अन्य डेल्टा क्रमशः उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु कर्नाटक, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा गोवा राज्यों में है।

भारत के कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण नमभूमि क्षेत्र हैं : कौल्लेरू (आंध्रप्रदेश), वूलर (जम्मू काश्मीर), चिल्का (उड़ीसा), लोकतक (मणिपुर), भोज (मध्यप्रदेश), सांभर (राजस्थान), पिचोला (राजस्थान), अष्टमुदिर (केरल), सस्थमकोटबा (केरल), हरिका (पंजाब), कंजली (पंजाब), उजनि (महाराष्ट्र), सुखना (चण्डीगढ़), रेणुका (हिमाचल प्रदेश), काबर (बिहार), नाल सरोवर (गुजरात), डल झील (श्रीनगर)।

28.5 पर्यटन का प्रभाव

इस भाग में हम पर्यटन उद्योग का इन नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव तथा उसके क्या परिणाम होते हैं इस पर चर्चा करेंगे। कुछ विशेष नमभूमि क्षेत्रों की विनिर्दिष्ट विशेषताओं से भी हम आपको अवगत कराएंगे।

पर्यावरणविदों ने पर्यटन केंद्रों पर होने वाले पर्यावरणीय नाश व ह्रास के लिए पर्यटन को एक अहम कारण माना है। पर्यटन योजनाओं की अकुशल, अनुपयुक्त संयोजना, तथा इस उद्योग की खतरनाक, बेहतहाशा, अनियंत्रित वृद्धि इस नाश व ह्रास के महत्वपूर्ण एवम उत्तरदायी कारक हैं। उदाहरण के लिए आज से 60 वर्ष पहले श्रीनगर में स्थित डल झील का क्षेत्रफल 25 वर्ग कि.मी. था वो आज सिकुड़कर मात्र 10 वर्ग कि.मी. रह गया है। सम्भवतः यह अधिक पर्यटकों तथा उनके द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के कारण ही हुआ है।

उड़ीसा की चिल्का झील, पर्यटकों के लिए स्वर्ग मानी जाती है, यहाँ पानी का काफी लम्बा फैलाव है जो झील के चारों और अनेक छोटी-छोटी हरी भरी पहाड़ियों से घिरी तथा देशांतरगामी विविध मेहमान पक्षियों से भरी रहती है। इस झील के चारों ओर अनेक सुंदर स्थान हैं जिन्हें पर्यटन केंद्रों के रूप में विकसित किया जा सकता है। भारत शासन के पर्यटन विभाग ने इन संभावित विकसित किए जा सकने वाले स्थानों में से 4 स्थल क्रमशः समालाद्वीप, राम्भ, बरकुल, तथा सतपदा स्थान का चयन किया है। बरकुल में एक जलक्रीड़ा परिसर विकसित करने की निर्माण योजना प्रारंभ हो चुकी है तथा सतपदा में पर्यटक कुटिर निर्माण की जाने की योजना विचाराधीन है। वहीं कालीजय नामक एक सुंदर मंदिर भी है जो हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त चिल्का झील के आसपास तीन अन्य आकर्षण हैं : डौल्फिन, ब्लैक बक, तथा आयस्टर्स। इनके बारे में पर्यटकों को पर्याप्त जानकारी नहीं है। चिल्का झील के समीप सतपदा तथा आराखुंड क्षेत्रों के बीच जहां चिल्का झील आकर समुद्र में मिलती है, में लगभग 50 बड़ी डौल्फिन स्वतंत्र रूप से निश्चित मस्ती में तैरती हैं। दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी तथा चिल्का झील के बीच एक संकरी पट्टी के क्षेत्र में काफी अधिक संख्या में काले हिरण (ब्लैक बक) रहते हैं। अन्ततः इन स्थानों पर न सिर्फ मनोरंजन पर्यटन बल्कि रोमांचक, धार्मिक तथा पारिस्थितिकी पर्यटन विकसित करने की आपार संभावना है।

हालांकि जब किसी स्थान पर आने वाले पर्यटकों की संख्या उस स्थान विशेष के पर्यावरण के सहनीय शक्ति से ज्यादा हो जाती है तब कठिनाइयां प्रारंभ हो जाती हैं। अवकाश पर्यटन अपने साथ पर्यटकों की बड़ी भीड़ साथ लाता है जो संवेदन शून्यता के साथ थोड़े समय में ज्यादा पैसा बटोरना चाहते हैं। नदी या झीलों के किनारों पर अनेक होटल या अन्य आवासीय इकाइयां अनियोजित ढंग से निर्मित कर दी जाती हैं। इन होटल की विसर्जित अपशिष्ट, विसर्जित कचरा तथा गरर का पानी सीधे नमभूमि क्षेत्रों में पहुँचकर उसके पानी को दूषित करते हैं। कई बार इन नमभूमि क्षेत्रों में नौकाचालन के लिए अनधिकृत व अनियोजित ढंग से अस्थाई जेट्टी बना ली जाती है। प्रायः इन निर्माण कार्यों को कार्यान्वित करते समय समीपस्थ उपलब्ध नमभूमि क्षेत्रों में उठने वाली लहरों की प्रकृति का ध्यान नहीं रखा जाता है जिसका संबंधित नमभूमि क्षेत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जल्दी ही नमभूमि क्षेत्रों के किनारों पर अनावश्यक मिट्टी जमना शुरू हो जाती है तथा नमभूमि क्षेत्र का क्षेत्रफल धीरे-धीरे घटना शुरू हो जाता है। थोड़े समय बाद लकड़ी की बनी सादी डोंगियों का स्थान मोटर से चलने वाली मोटर बोट ले लेती है जो चलने में न सिर्फ भारी आवाज पैदा करती है बल्कि चालन के समय

नमभूमि क्षेत्र के पानी में मोबिल आयल, पेट्रोल तथा डीजल के अंश भी बिखेरते जाती है। इसके अतिरिक्त अनेक असंवेदनशील तथा संकुचित दृष्टिकोण के पर्यटक वहाँ की स्थानीय पारिस्थितिकी व्यवस्था में उपलब्ध कुछ विलक्षण, महत्वपूर्ण, असामान्य बहूमूल्य वनस्पतियां अथवा अन्य वन्य प्राणी प्रजातियों को छोड़कर नुकसान पहुँचाते हैं। इस प्रकार की अनेक समस्याएं न सिर्फ चिल्का झील बल्कि सभी प्रमुख महत्वपूर्ण तथा बड़े नमभूमि क्षेत्रों को अनुभव करना पड़ता है। हालाँकि अब सब ओर से एकमत होकर यह निर्णय ले लिया गया है कि पर्यावरणीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पर्यटन का विकास किया जाना चाहिए तथा यह विकासीय प्रचार योजनाएं समीपस्थ, उपलब्ध नमभूमि क्षेत्रों के विकास व संरक्षण की योजनाओं के अनुरूप व सामंजस्य में होना चाहिए।

28.6 अत्यधिक पर्यटन और नमभूमि क्षेत्र

अधिक पर्यटन नमभूमि क्षेत्रों पर अनेक प्रकार के विपरीत प्रभाव डालता है। उनमें से कुछ इस प्रकार के हैं :

देशान्तरगामी पक्षियों के संख्या में कमी – ठंड के महीनों में दूरदराज के देशों से हजारों मील की दूरी तयकर किसी नमभूमि क्षेत्र में उड़कर आना तथा तीन चार माह विश्राम कर फिर वापस अपने देश लौट आने की प्रक्रिया या आदत की सोच ही दिमाग भन्ना देती है परंतु एक बात सुनिश्चित है कि यह देशान्तरगामी परदेशी पक्षी किसी एक खास नमभूमि क्षेत्र पर आकर हर वर्ष इकट्ठे होते हैं क्योंकि उन्हें वहाँ का पर्यावरण, वातावरण दोस्ताना, सुरक्षित, शांतिपूर्ण वह सहज लगता है और उन्हें सरलता से पर्याप्त भोजन की भी उपलब्धता रहती है। अधिक पर्यटन के भार या दबाव का अर्थ है अधिक शोर, अधिक प्रदूषण। यहाँ तक कि कई असंवेदनशील, अबौद्धिक पर्यटकों द्वारा तेज आवाज में रेडियो या टेप चलाने से इन आने वाले देशगामी परदेशी विदेशी पक्षियों के आने की संख्या में कमी होती है। उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि राजस्थान की भरतपुर झील में आने वाले सायबेरियन सारसों ने अब आना बंद कर दिया है। उसी प्रकार चिल्का झील में अनेक कारणों से कई प्रकार की जलीय जीव प्रजातियां अब हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो गई हैं

अधिक दोहन/अधिक शिकार – प्राय: प्रत्येक नमभूमि क्षेत्र में खूब मछलियां पाई जाती हैं। सबसे असहनीय व्यवहार या कार्य उन नमभूमि क्षेत्रों में नावों का उपयोग है जो मछलियों के प्रजनन क्षेत्र में किया जाता है। मोटर बोट चलाने की तेज आवाज के कारण यह मछलियां डर कर भाग जाती हैं अथवा कई बार मर भी जाती हैं।

मिट्टी का जमाव – शायद यह सबसे अधिक नुकसान पहुँचाने वाली समस्या है जिसका सामना प्रत्येक नमभूमि क्षेत्र को करना पड़ता है। पानी एकत्रित होने के क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों से मिट्टी का जमाव होता है। जिससे नमभूमि क्षेत्र को भारी नुकसान पहुँचता है। यह मिट्टी का जमाव, नमभूमि क्षेत्र के आसपास उपलब्ध वन या छोटी-मोटी झाड़ियों वाले क्षेत्र के विनाश से होता है जिसके कारण सामान्य तौर से, वर्षा अपने साथ अधिक मिट्टी बहाकर नमभूमि क्षेत्र तक ले जाती है या फिर नमभूमि क्षेत्र के तलहटी में जमा होती जाती है जिससे नमभूमि क्षेत्र की गहराई तेजी से कम होने लगती है। इससे नमभूमि क्षेत्र की तलहटी में उपलब्ध, विद्यमान वनस्पतियां मर जाती हैं जो देशान्तरगामी पक्षियों के लिए उपयुक्त पर्याप्त भोज्य सामग्रियां होती हैं।

क्षेत्रफल का संकुचन – नमभूमि क्षेत्र के आकारों का संकुचन एक अन्य समस्या है जो प्राय: सभी नमभूमि क्षेत्रों को झेलनी पड़ती है। आमतौर पर यह देखने को मिलता है कि नमभूमि क्षेत्र के बड़े हिस्सों को घर बनाने के लिए पाट दिया जाता है। ऐसे भी प्रकरण हैं जहाँ पहले तो नमभूमि क्षेत्र के बड़े भाग झींगा मछलियों के पालन/उत्पादन के लिए अथवा पर्यटक परिसर बनाने के लिए निजी व्यक्तियों के ठेके पर दिए जाते हैं। नमभूमि के आसपास समीपस्थ भूमि क्षेत्रों में होने वाले अवैद्य अतिक्रमणों के कारण भी इन नमभूमि क्षेत्रों का क्षेत्रफल घटता जाता है। यह अतिक्रमण मछली पालन या अन्य जलीय जीवों के उत्पादन के लिए हो सकते हैं जैसा कि चिल्का झील में हुआ है। मानवीय अतिक्रमण के कारण ही श्रीनगर की प्रसिद्ध खूबसूरत डल झील अब छोटी हो गई है।

प्रदूषण – तमाम नमभूमि क्षेत्र अधिक शोरगुल तथा गैरजिम्मेदराना ढंग से फेंके गए कचरे तथा

पर्यटकों द्वार खाली पैकेट, पॉलीथिन की थैलियाँ, खाली बोतलें तथा खाने पीने के बचे सामान को लापरवाही से कहीं भी फेंक देने पर प्रदूषित होते हैं तथा प्राय: सभी नमभूमि क्षेत्रों द्वारा अनुभव किया जाने वाला प्रमुख संकटों में से एक है। नमभूमि क्षेत्रों की सीमा पर आवासीय वस्तियों से निकलने वाली गंदगी, गंदा पानी तथा ठोस नगरीय अपशिष्ट भी इन्हीं नमभूमि क्षेत्रों में विसर्जित होता है।

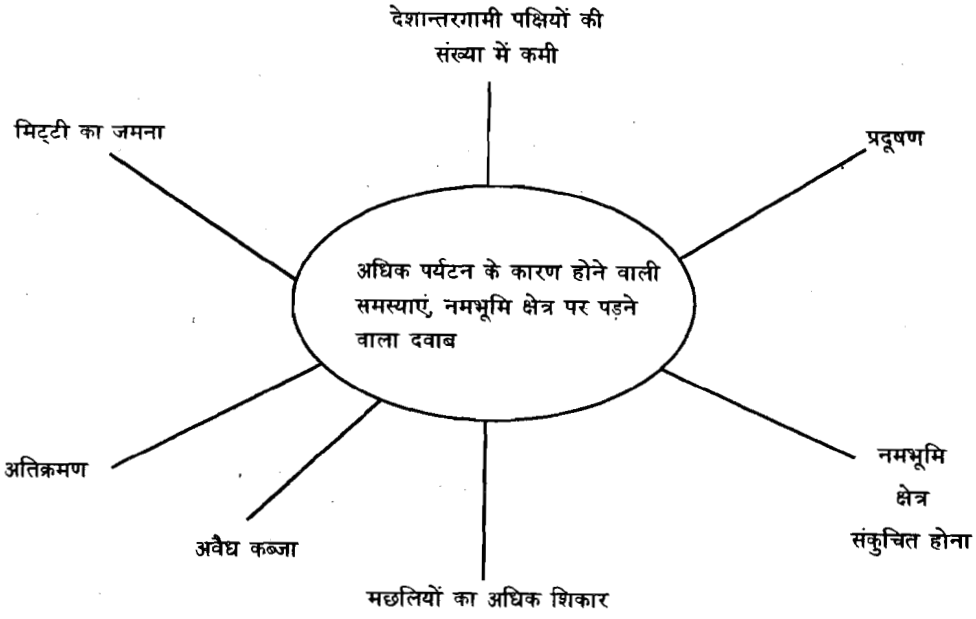

नमभूमि क्षेत्र पर अधिक पर्यटन का संभावित प्रभाव

आंध्र प्रदेश स्थित पुलिकट झील जो एक समय मुर्गियों के उत्पादन/प्रजनन एक प्रमुख केंद्र था उसे आज अनेक रासायनिक प्रदूषण के कारण गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।

उपरोक्त सूचीबद्ध समस्याएं सामने आई हैं तथा अति पर्यटन के कारण नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाली भारी दबाव के कारण और विकराल हो गई हैं। हालाँकि पर्यटन को इन क्षेत्रों में पूरी तरह से प्रतिबंधित करने और पर्यटकों की संख्या नियंत्रित करने से समस्या का हल निकलने वाला नहीं। इसके विपरीत ऐसी विधियाँ ईजाद की जानी चाहिए ताकि पर्यटक पारिस्थितिकी संतुलन को असंतुलित किए बिना प्राकृतिक सौंदर्य की छटा का आनन्द उठा सके व प्रशंसा कर सके।

28.7 नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण

अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के नमभूमि क्षेत्रों पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ईरान के रमसर शहर में पहली बार फरवरी 1971 में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में विश्व स्तर के महत्वपूर्ण प्रमुख नमभूमि क्षेत्रों की सूची तैयार की गई थी। इस सूची में स्थान पाने वाले भारत के दो नमभूमि क्षेत्र थे : चिल्का झील, भरतपुर झील। धीरे-धीरे नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण, अन्य बनाई जाने वाली योजनाओं में सम्मिलित किया जाने लगा और भारत सरकार ने राष्ट्रीय नमभूमि प्रबंधन समिति का गठन किया। हालाँकि किसी भी नमभूमि क्षेत्र के द्वारा पर्यटकों को समायोजित करने की क्षमता के अन्तर्गत टिकाऊ विकास का उपयुक्त स्तर व मार्ग निर्धारित करने से ही सफलता मिल सकती है। पारिस्थितिकी तंत्र की उसके यर्थाथ सम्भव मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रबंधन की प्रभावशीलता का आंकलन के लिए आवश्यक जानकारी तथा सांख्यिकी उपलब्ध कराने के लिए लम्बी अवधि के शोध की आवश्यकता है।

सही एवं उपयुक्त दृष्टि से नमभूमि क्षेत्र आजकल पक्षियों का अवलोकन करने के प्रमुख केंद्र हो गए हैं। इस प्रकार पर्यटकों के आकर्षण के लिए अनेक प्रकार के नमभूमि क्षेत्रों को पर्यटन आकर्षण केंद्र के रूप में विकासेत करने का प्रस्ताव है। भरतपुर के समीप सरिस्का पक्षी अभ्यारण्य ने आदर्श प्रस्तुत किया है। आखिरकार किसी भी अभ्यारण्य का तबतक कोई मूल्य या महत्व नही हैं जबतक मानव प्रजाति तथा पक्षी आपस में एक दूसरे से सम्पर्क संवाद नहीं कर पाएं। हालाँकि यह अनुभव किया

जाना कहीं महत्वपूर्ण है कि पर्यटकों के आगमन की संख्या को बहुत कड़ाई से नियंत्रित करने की आवश्यकता है इसके लिए नमभूमि क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है।

- नमभूमि क्षेत्रों के आसपास मानवीय गतिविधियों के क्षेत्र
- बफर क्षेत्र (आड़ का काम करने वाला क्षेत्र)
- संरक्षण क्षेत्र, नमभूमि के मुख्य हिस्से, जहाँ किसी भी प्रकार के पर्यटन हस्तक्षेप की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

नमभूमि क्षेत्र के संरक्षण का अर्थ यह नहीं है कि नमभूमि क्षेत्रों को एक प्रतिबंधित क्षेत्रों की तरह अलग-अलग कर दिया जाए बल्कि एक महत्वपूर्ण उपयोगी संसाधन के रूप में उसका घनात्मक तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए। एक सफल प्रबंधक अधिक जानकारियों की माँग करता है कि नमभूमि क्षेत्र वास्तव में किस तरह कार्य करते हैं ताकि टिकाऊ ढंग से उनका उपयोग मछली पालन, जल जैविक पालन, पर्यावरण की सामान्य गुणवत्ता वृद्धि, शैक्षणिक तथा शोध कार्यों के लिए किया जा सके।

पारिस्थितिकी की दृष्टि से इन विशेष क्षेत्रों को संरक्षित करने के लिए बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं। सर्वसाधारण की जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ यह स्पष्ट है कि विश्व संरक्षण रणनीति की अवधारणा में सब कुछ समाहित है।

- अनिवार्य पारिस्थितिकी प्रक्रियाओं में तथा जीवन के लिए जरूरी व्यवस्था का रखरखाव
- जैविक विविधता का अनुरक्षण
- जैव प्रजातियों तथा पारिस्थितिकी तंत्र का टिकाऊ उपयोग
- जनोन्मुखी दृष्टिकोण

तथा उपरोक्त तीनों बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त पारिस्थितिकी नीतियों का निर्धारण किया जाना चाहिए।

यदि इस पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित तथा संरक्षित रखा जाना है तो इस प्रकार की विशिष्ट नीतियों को निर्धारित करना होगा। नमभूमि क्षेत्रों के संरक्षण तथा प्रबंधन का विषय भावनात्मक आधार पर नहीं होना चाहिए। और न सिर्फ विशिष्ट प्रजातियों के संरक्षण के लिए बल्कि इस पारिस्थितिकी तंत्र को यथार्थ आर्थिक, पारिस्थितिकी लाभों के लिए जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) नीचे दिए गए नमभूमि क्षेत्रों व उनके स्थानों का उपयुक्त मिलान कीजिए।

क)	कौल्लेरू	i)	बिहार
ख)	लोकतक	ii)	महाराष्ट्र
ग)	पिचोला	iii)	आंध्रप्रदेश
घ)	उजनी	iv)	गुजरात
च)	काबर	v)	राजस्थान
छ)	नालसरोवर	vi)	मणिपुर

2) पर्यटन का नमभूमि क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

28.8 सारांश

भारत की धनी तथा भौगोलिक विविधता ने हमें दुनिया के कुछ बेहतरीन नमभूमि क्षेत्र दिए हैं। भरतपुर, चिल्का तथा चिल्का झील पारिस्थितिकी दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों के लिए गहरे आकर्षण के केंद्र हैं। इसलिए पर्यटन के इस प्रकार के विकास पर जोर होना चाहिए ताकि परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण इन क्षेत्रों को वांछित संरक्षण भी मिले और पर्याप्त प्रचार/प्रसार भी।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप पौधों तथा प्राणी जगत को टिकाऊ बनाने के लिए तथा महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी संबंधी कार्य करने की दृष्टि से नमभूमि क्षेत्रों के अर्थ, कार्य व महत्व को समझ गए होंगे। पर्यटन के लिए उनके महत्व पर इस इकाई में प्रकाश डाला गया है। बढ़ता हुआ पर्यटन इन नमभूमि क्षेत्रों पर अनेकों प्रकार के खतरे और समस्या पैदा करता है। इन सबसे नमभूमि क्षेत्रों द्वारा प्रेषित अनेक महत्वपूर्ण वनस्पतियां तथा जैविक प्रजातियां लुप्त हो सकती हैं। अब तक आप हमारे नमभूमि क्षेत्रों द्वारा संभावित विकट संकटों से अवगत हो चुके होंगे। आवश्यकता है नमभूमि क्षेत्रों को उनकी समस्त अनिवार्य विशेषताओं को यथावत जीवित रखते हुए उनके संरक्षण के लिए विभिन्न उपायों को विकसित करने की।

28.9 शब्दावली

ईकोटोन : दो प्राकृतिक निवास स्थल के बीच का स्थान जहाँ विभिन्न प्राणी प्रजाति विचरण कर सकें अर्थात दो भिन्न-भिन्न पारिस्थितिकी तंत्र जहाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर अलग होते हैं।

दलदल : निचला दलदली क्षेत्र

हिन्टरलैंड : समुद्री किनारों के समीपस्थ शहरी क्षेत्र

मैनग्रोव : वे समसीतोष्ण क्षेत्र जो दलदली किनारों पर विकसित होते हैं।

जैटी : वह मानव निर्मित अस्थाई या स्थाई निर्माण कार्य जिसके सहारे नदी, तलाब या नमभूमि क्षेत्र या समुद्र में नौकाचालन या नौका विहार की जाती है।

मिट्टी का जमाव : पानी के कारण पैदा होने वाला कीचड़

28.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 28.2
2) क) स्पेन
   ख) ग्रीस
3) देखिए उपभाग 28.2.2

बोध प्रश्न 2

क)	iii)
ख)	vi)
ग)	v)
घ)	ii)
च)	i)
छ)	iv)

2) देखिए भाग 28.5
3) देखिए भाग 28.7